परम्परागत शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

*** डॉ. श्रीमती दीपाली शर्मा ** कु. रक्षा डावर**

चिन्ता व्यक्ति अथवा बालक की वह कष्टप्रद मानसिक स्थिति है, जिसमें वह भविष्य की विपत्तियों की आकांक्षाओं से व्याकुल रहता है। चिन्ता भय का एक प्रकार है, जो वास्तविक चीजों से न होकर काल्पनिक चीजों से होता है। प्रस्तुत अध्ययन में इन्दौर शहर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से संबद्ध विभिन्न शिक्षा विभागों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत वे छात्र–छात्राएँ जो 16–24 वर्ष आयु वर्ग के हैं एवं इन शिक्षण संस्थाओं में परम्परागत अथवा व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया। कुल न्यादर्श संख्या 150 ली गई है, जिनका चुनाव उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया। विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर का अध्ययन करने हेतु डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव एवं डॉ. गोविन्द तिवारी द्वारा रचित चिन्ता मापन (Manifesat Anxiety Scale) का उपयोग किया गया। संकलित तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने हेतु t-tesat का उपयोग किया गया। तथ्यों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि परम्परागत और व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर में कोई अंतर नहीं पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा के स्वरूप अथवा स्तर (परम्परागत एवं व्यावसायिक) का चिंता के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

1. प्रस्तावना :– आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति तनाव, चिन्ता व प्रतिबल परिस्थितियों से ग्रस्त है। चिन्ता व्यक्ति की वह कष्टप्रद मानसिक स्थिति है, जिसमें वह भविष्य की विपत्तियों की आशंकाओं से व्याकुल रहता है। जब व्यक्ति तनावपूर्ण परिस्थितियों से घिर जाता है तो उसमें सबसे पहली सांवेगिक अनुक्रिया होती है, वह है चिन्ता। चिन्ता शब्द को सर्वप्रथम लाने का श्रेय फ्रायड (1984) को है।

फ्रायड के अनुसार, ''संकट के प्रति अहं की प्रतिक्रिया चिन्ता कहलाती है।''

चिन्ता की **उत्पत्ति** वास्तविक अथवा काल्पनिक कष्टों की स्थिति में होती है, यह लक्षणों के आधार पर तीन मुख्य **स्वरूपों** तीव्र चिन्ता, दीर्घ चिन्ता एवं आतंक प्रतिक्रिया में दिखाई देती है।

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण :

फ्रायड का चिन्ता संबंधी सिद्धांत :– जब व्यक्ति की लैंगिक मूल प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति नहीं होती है तो ये कामशक्ति में रूपान्तरित होकर चिन्ता के रूप में उत्पन्न होती है।

सुलीवान का चिन्ता संबंधी सिद्धांत :– चिन्ता सम्पूर्ण रूप से व्यक्ति की स्व एवं दूसरों से संबंध बनाने की क्रिया का परिणाम है।

हार्नी का चिन्ता संबंधी सिद्धांत :– जब सुरक्षा आवश्यकता की तुष्टि नहीं होती है तो बच्चों में विद्वेष उत्पन्न हो जाता है। जब विद्वेष भाव का दमन हो जाता है तो चिन्ता की उत्पत्ति होती है।

चिन्ता के लक्षण :– सामान्य रूप से चिन्ताग्रस्त व्यक्तियों में निम्नलिखित लक्षण दिखाई देते हैं :–

निर्णय लेने में कठिनाई, अत्यधिक संवेदनशीलता, स्वास्थ्यहीनता, भय, असुरक्षा की भावना, उत्साह में कमी, विश्वास में कमी, काल्पनिक संकट के प्रति अस्पष्ट भय, निन्द्रा विक्षोभ एवं मिश्रित तनाव।

चिन्ता के कारण :– लक्ष्य प्राप्ति में बांधा, मानसिक संघर्ष व विपुलता, पारिवारिक संबंध ठीक न होना, कम बुद्धिलब्धि होना, अनैतिक भावनाओं का दमन, झगड़ा, अति संवेदनशीलता तथा असुरक्षा की तीव्र भावना, जीवन का कठोर स्थितियों से निपटने की अयोग्यता, अपने प्रियजन से दूरी, हतोत्साहित जीवन तथा मादक पदार्थों का अत्यधिक सेवन।

2. शोध प्रविधि

2.1 उद्देश्य :–

2.1.1 परंपरागत शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.1.2 परंपरागत शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्र विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.1.3 परंपरागत शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्रा विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.2. उपकल्पना :–

2.2.1 परंपरागत शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

2.2.2 परंपरागत शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्र विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

2.2.3 परंपरागत शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्रा विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

2.3 निदर्शन :– प्रस्तुत अध्ययन में इन्दौर शहर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से संबद्ध विभिन्न शिक्षा विभागों एवं

*** सहा. प्राध्यापक बाल विकास गृह विज्ञान विभाग, शा. महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इन्दौर**
**** एम.फिल (गृह विज्ञान), स्कूल ऑफ एडवांस्ड लिबरल स्टडीज, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र)**

महाविद्यालयों में अध्ययनरत वे छात्र–छात्राएँ, जो 16–24 वर्ष आयु वर्ग के हैं एवं इन शिक्षण संस्थानों में परम्परागत अथवा व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। कुल न्यादर्श संख्या 150 ली गई है, जिनका चुनाव उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया जाता है। (सारणी–1)

2.4 उपकरण :– चिंता के स्तर का मापन करने हेतु आगरा महाविद्यालय आगरा के मनोवैज्ञानिक विभाग के प्रोफेसर डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव एवं डॉ. गोविन्द तिवारी द्वारा रचित चिन्तामापनी (Manifesat Anxiety Scale) का प्रयोग किया गया है।

2.5. कार्यकारी परिभाषाः–

(1) परंपरागत शिक्षाः– परंपरागत शिक्षा के अन्तर्गत बी.ए. (सामान्य), बीएस.सी. (सामान्य), बी.एच.एससी. (सामान्य), बी.कॉम. (सामान्य), एम.ए, इत्यादि।

(2) व्यावसायिक शिक्षा :– व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत बी.ई., एम.ई., बी.बी.ए., एम.बी.ए., बी.सी.ए., एम.सी.ए., बी.टेक., एम.टेक., बी.एच.एमएस., एम.बी.बी.एस., बी.एस.सी. (ऑनर्स) इत्यादि।

2.6 सांख्यिकीय विश्लेषण :– संकलित तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने हेतु t-tesat का उपयोग किया गया है।

तालिका क्रमांक 2.6.1 में शैक्षणिक स्तर पर परंपरागत शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर के माध्य, प्रमापविचलन एवं t मूल्य को प्रस्तुत किया गया है

जैसा की उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पंरपरागत एवं व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर का माध्य 47.2400 है तथा प्रमाप विचलन 14.9004 है । जबकि व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की चिंता के स्तर का माध्य 46.6133 एवं प्रमाप विचलन 17.3648 है। इन माध्य अंतरो की सार्थकता की जाँच करने के लिये t परीक्षण का प्रयोग किया गया ।

t परीक्षण का मूल्य .237 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः परिकल्पना 2.6.1 पंरपरागत शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के चिंता के स्तर में कोई अंतर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

उक्त तालिका का चित्रमय प्रदर्शन करने पर ज्ञात होता है कि व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की चिंता का स्तर परम्परागत शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की तुलना में कुछ उच्च है । (देखे चित्र क्रमांक 2.6.1)।

तालिका क्रमांक 2.6.2 में पंरपरागत शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्र विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर के माध्य, प्रमापविचलन एवं t मूल्य को प्रस्तुत किया गया है।

जैसा की उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पंरपरागत शिक्षा में अध्ययन छात्र विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर का माध्य 47.2218 है तथा प्रमाप विचलन 14.008 है, जबकि व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्र विद्यार्थियों की चिंता के स्तर का माध्य 47.1110 एवं प्रमाप विचलन 15.12 है। इन माध्य अंतरो की सार्थकता की जॉच करने के लिये t परीक्षण का प्रयोग किया गया ।

t परीक्षण का मूल्य 1.429 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना 2.6.2 ''पंरपरागत शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्र विद्यार्थियों की चिंता के स्तर में कोई अंतर नहीं पाया जाता है'', स्वीकृत की जाती है।

उक्त तालिका का चित्रमय प्रदर्शन करने पर ज्ञात होता है कि व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्र विद्यार्थियों की चिंता का स्तर परम्परागत शिक्षा में अध्ययनरत छात्र विद्यार्थियों की तुलना में कुछ उच्च है । (देखे चित्र क्रमांक 2.6.2)।

तालिका क्रमांक 2.6.3 में पंरपरागत शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्रा विद्यार्थियों की चिन्ता के स्तर के माध्य, प्रमापविचलन एवं t मूल्य को प्रस्तुत किया गया है

जैसा की उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पंरपरागत शिक्षा में अध्ययनरत छात्रा विद्यार्थियों के चिन्ता के स्तर का माध्य 48.16 है तथा प्रमाप विचलन 12.73 है, जबकि व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्रा विद्यार्थियों की चिंता का स्तर का माध्य 44.25 एवं प्रमाप विचलन 15.73 है। इन माध्य अंतरो की सार्थकता की जॉच करने के लिये t परीक्षण का प्रयोग किया गया ।

t परीक्षण का मूल्य .039 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः परिकल्पना 2.6.3 ''पंरपरागत शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्रा विद्यार्थियों की चिंता के स्तर में कोई अंतर नहीं पाया जाता है'', स्वीकृत की जाती है।

उक्त तालिका का चित्रमय प्रदर्शन करने पर ज्ञात होता है कि परम्परागत शिक्षा में अध्ययनरत छात्रा विद्यार्थियों की चिंता का स्तर व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत छात्रा विद्यार्थियों की तुलना में कुछ उच्च है। (देखे चित्र क्रमांक 2.6.3)।

3. निष्कर्ष

शैक्षणिक स्तर के आधार पर परांपरागत शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के चिन्ता के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

माध्य एवं चित्रमयी प्रदर्शन के आधार पर निरीक्षण करने पर ज्ञात होता है कि परंपरागत शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चिन्ता का स्तर व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थी की तुलना में कुछ निम्न हैं :–

अपने निष्कर्ष की सार्थकता को प्रमाणित करने हेतु में निम्नांकित अध्ययन की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहूँगी।

जी.राजमोहन एवं ए.कुप्पन (1980) ने ''नियंत्रण का बिन्दु व महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में चिन्ता का स्तर'' पर अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि चिन्ता के स्तर में बाह्य केन्द्रित छात्र एवं छात्राओं के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया। हालांकि आंतरिक केन्द्रित छात्र व छात्राओं के मध्य सार्थक संबंध पाया गया। कला एवं विज्ञान के चिन्ता प्राप्तांकों के मध्य भी कोई संबंध नहीं देखा गया।

2.3 SAMPLE AT A GLACE

Sex	Educational Status		Total
	Traditional Education	Vocational Education	
Boy	36	39	75
Girl	36	39	75
Total	**72**	**78**	**150 Grand Total**

Table No. 2.6.1

Difference Between Educational Status Regarding Anxiety

Category Educational Status	N	DF	Mean	S.D.	t-Value	Inference
Traditional Education	75	148	47.2400	14.9004	.237	Non Significant
Vocational Education	75	-	46.6133	17.3648		

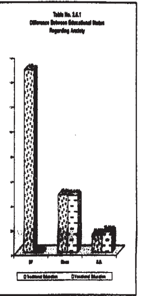

• Non Significant at 0.05 level.

Table No. 2.6.2

Difference Between Educational Status Regarding Anxiety

Belonging to Male Sex

Category Educational Status	N	DF	Mean	S.D.	t-Value	Inference
Traditional Education	36	73	47.2218	14.008	1.429	Non Significant
Vocational Education	39	-	47.1110	15.1234		

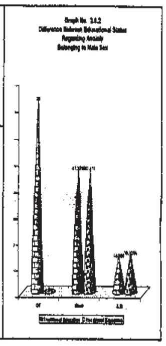

* Non Significant at 0.05 level.

Table No. 2.6.3

Difference Between Educational Status Regarding Anxiety

Belonging to Female Sex

Category Educational Status	N	DF	Mean	S.D.	t-Value	Inference
Traditional Education	36	74	48.1667	12.73	.039	Non Significant
Vocational Education	39	-	44.25	15.73		

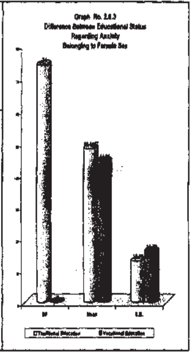

* Non Significant at 0.05 level.

4. सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान यह अनुभव किया गया है कि चिन्ता के स्तर में निम्न अध्ययन भविष्य में किये जा सकते हैं :–

(1) परिवार के प्रकार का चिन्ता के स्तर पर प्रभाव
(2) बाल पालनपोषण विधियों का चिन्ता के स्तर पर प्रभाव
(3) जन्मक्रम का चिन्ता के स्तर पर प्रभाव
(4) सामाजिक, आर्थिक स्तर का चिन्ता के स्तर पर प्रभाव
(5) चिन्ता स्तर का उपलब्धि प्रेरणा से सहसंबंध पर प्रभाव
(6) पारिवारिक संबंधों का चिन्ता के स्तर पर प्रभाव।
(7) कामकाजी माताओं के बच्चों में चिंता के स्तर का अध्ययन।

सन्दर्भ-

1. Eric J. Trimmer 1970, “Understanding Anxiety in every day life”, Page No. 15, 49.
2. Hurlock B. Elizabeth 1976, “Development Psychology”, Page No. 346.
3. रस्तोगी घनश्यामदास 1980 ''आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान'' प्रकाशन टाटा मेंक्ग्राहिल, प भठ क्रमांक 150।
4. Robert E. Grinder 1963 “Studiesa in Adopesacence” the Macmillan Company Collier – Macmillan Canada Ltd., Toranto on tario, Page No. 192.
5. Miller, G.A. 1973 “Psychology of Science of Mental Life” Page No. 346.
6. डॉ. कपिल हंसकुमार मुकर्जी ''सांख्यिकी के मूलतत्व'' चतुर्थ संस्करण प भठ क्रमांक 512।
7. मुखर्जी रविन्द्रनाथ 1983 ''सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी'' विवेक प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक 249, 293